वर्ष - 1, अंक-1, सितम्बर 2014

गौरैया

जीवन का संदेश वाहक

बिहार सरकार

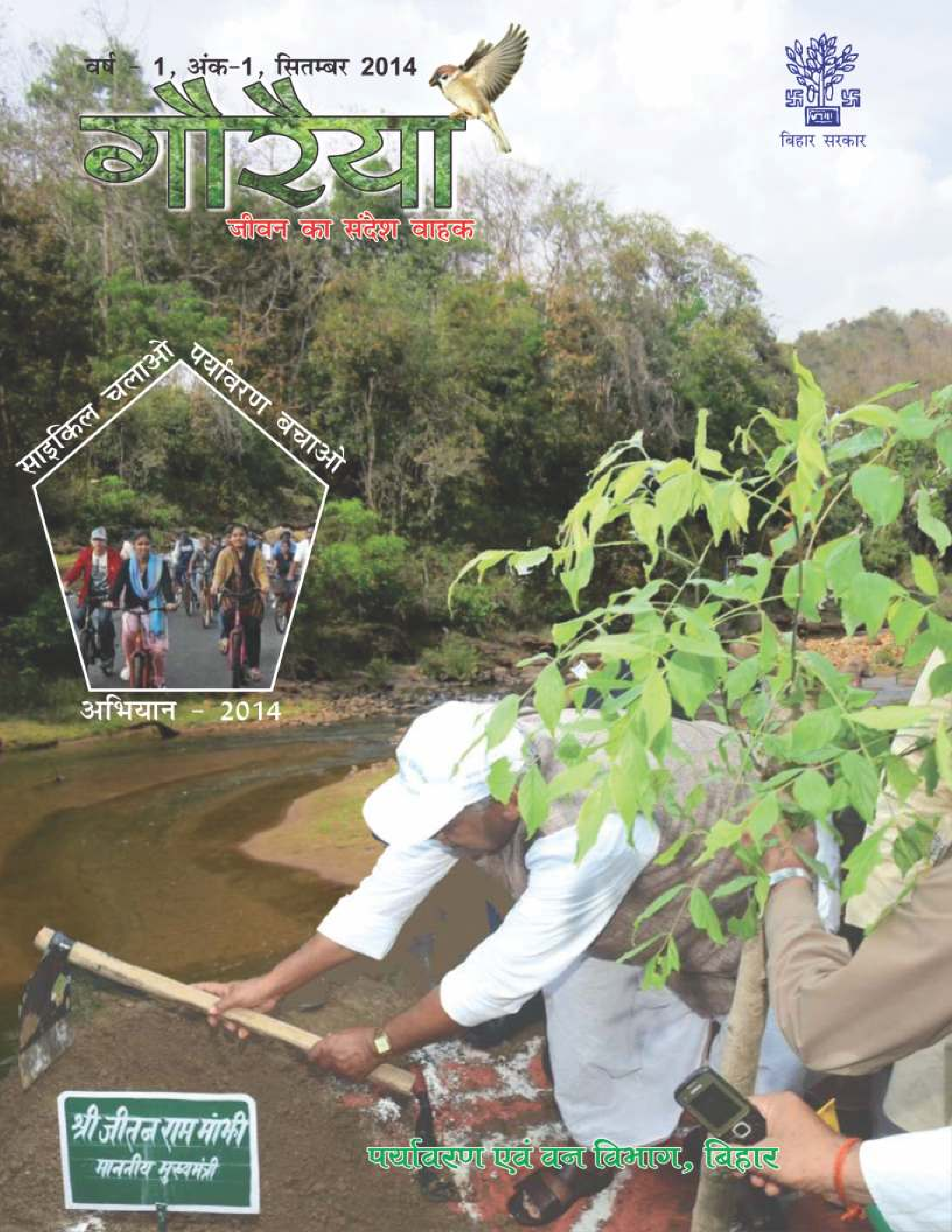

पर्यावरण एवं वन विभाग, बिहार

अपनों से दूर अपनी सी गौरैया

खूबसूरत पक्षियों की भीड़ में इस साधारण सी दिखने वाली छोटी सी चिड़िया को हम कई स्थानीय नाम फुरगुद्दी, चुनमुन चिरई और न जाने कौन-कौन से नाम से जानते हैं। अँग्रेजी में इसे Sparrow कहते हैं। घरों में रहनेवाली इसकी एक प्रजाति 'House Sparrow' कहलाती है। यह छोटी सी चिड़िया हमारी जिंदगी का हिस्सा हुआ करती थी। सुबह-सुबह चूँ-चूँ की आवाज से जगा दिया करती थी। कभी उड़कर इस कोने तो कभी उड़कर उस कोने। पुराने घरों में बीच में आँगन हुआ करता था और उसके चारों ओर कमरे हुआ करते थे। आँगन से उड़कर घर में आ जाया करती थी गौरैया। उस जमाने में जब बच्चों के लिए आज की तरह ज्यादा खिलौने नहीं हुआ करते थे, तो यही चिड़िया मन बहलाने का काम करती थी। कई लोग रोते हुए बच्चों से कहा करते- आ रे चिरइयाँ, आ, बऊआ ला, बिस्कुट ले आ और यह सुनकर बच्चे चुप हो जाते। तब माता या पिता बच्चे की बगल में बिस्कुट रख दिया करते, जिसे देखकर बच्चों को ऐसा लगता जैसे सचमुच चिड़िया ने ही बिस्कुट लाकर दिया हो। एक स्वाभाविक आत्मीयता हो जाती थी बच्चों की, इस चिड़िया के साथ। गौरैया जब अनाज के दाने चुगती तो बच्चे उसे पकड़ने की कोशिश करते। पर फुर्र से उड़ जाती थी गौरैया। एक सहज ही खेल का माहौल हो जाता। पर आजकल बहुत कम दिखती है गौरैया। न जाने कब वो हमारी जिंदगी से दूर होती गयी। प्रकृति के साथ हम मनुष्यों का यह रिश्ता भी न जाने कब खतम हो गया।

कंक्रीट के जंगल बढ़ते चले गए। घरों की डिजाइन में परिवर्तन हो गया। अब शायद ही किसी घर में खुला आँगन होता है। इन घरेलू परिंदों के ठिकाने खतम हो गए। आजकल मोबाइल के बढ़ते टावर के रेडियशन से भी इनकी संख्या घट रही है। मनुष्यों के साथ रहना पसंद करने वाली इस चिड़िया की घटती हुई संख्या निश्चित ही चिंता का विषय है। तो क्या इस संबंध में कुछ किया जा सकता है। अगर इच्छाशक्ति हो तो निश्चय ही कुछ हो सकता है।

वर्ष 2010 से 20 मार्च को 'विश्व गौरैया दिवस' के रूप में मनाने की शुरुआत हुई है। डाक विभाग ने भी गौरैया पर एक डाक टिकट जारी किया था। ऐसे में बिहार सरकार द्वारा गौरैया को राजकीय पक्षी घोषित करना एक स्वागतयोग्य कदम माना जा सकता है। पर सिर्फ इससे ही काम नहीं चलेगा। हमलोगों को भी अपने स्तर से प्रयास करना होगा। आज हमलोग अपने अपार्टमेंट में/घरों में गमले में पौधे लगाते हैं। सुबह-शाम उसमें पानी डालकर उसे सींचते हैं। बाजार से खरीदकर तोता या कुत्ता लाते हैं और उन्हें पालते हैं। यह एक प्रयास ही तो है प्रकृति से जुड़े रहने का। तो क्या हम अपनी इस स्वाभाविक सदस्य के लिए कुछ नहीं कर सकते, जिसे किसी बाजार से खरीद कर नहीं लाना है। बस अपनी जिंदगी का, अपने घर का थोड़ा सा स्थान देना है। मुझे लगता है कि थोड़ी कोशिश तो जरूर कर सकते हैं।

सत्यजीत नारायण सिंह

वर्ष - 1, अंक-1, सितम्बर 2014

गौरैया

जीवन का संदेश वाहक

संरक्षक

श्री पी.के.शाही

मंत्री, पर्यावरण एवं वन विभाग, बिहार

प्रधान सम्पादक

विवेक कुमार सिंह

सम्पादक

बी.ए.खान

कार्यकारी सम्पादक

विनोद अनुपम

सम्पादक मंडल

एस.एस.चौधरी

भारत ज्योति

ए.के.प्रसाद

पी. के.जायसवाल

मिहिर झा

संपर्क

शोध प्रशिक्षण एवं जन संपर्क प्रमंडल

संयुक्त भवन, नेहरु नगर, पटना

email-dfortpd@gmail.com

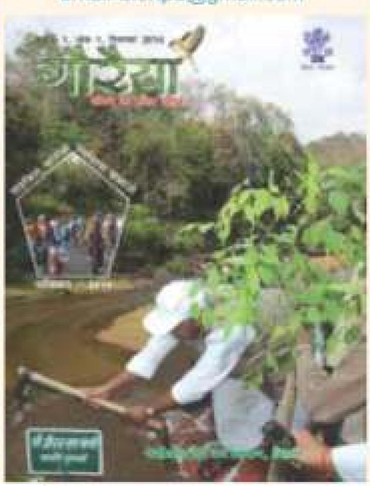

प्रधान संपादक की कलम से...

पृथ्वी के साथ हमारा समानुपातिक संबंध है। यह हमारा बोझ ही नहीं उठाती, हमारे जीवन-यापन की भी संपूर्ण व्यवस्था करती है। सवाल है हम पृथ्वी के लिए क्या करते हैं। पृथ्वी हमारा ख्याल रखती है, क्या हम पृथ्वी के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन कर पाते हैं। इन्हीं दायित्वों के प्रति अपने नागरिकों को जागरुक करने के लिए तीन वर्ष पूर्व बिहार सरकार ने बिहार पृथ्वी दिवस के परंपरा की शुरुआत की। सरकार की प्रकृति और पृथ्वी के प्रति गंभीरता की पहचान इसी से की जा सकती है कि इसके लिए 9 अगस्त की तिथि का चुनाव किया गया, क्रांति दिवस के रूप में जो तारीख बिहार के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में दर्ज है। वास्तव में सरकार की स्पष्ट समझ थी कि पृथ्वी को बचाने की मुहीम को अब आंदोलन का ही रूप देने की जरुरत है।

पृथ्वी की सुरक्षा के लिए सरकार द्वारा 11 संकल्प निर्धारित किए गए थे, जिसका स्मरण हरेक वर्ष माननीय मुख्यमंत्री के नेतृत्व में बिहार के नागरिकों द्वारा किया जाता है। इन्ही संकल्पों को सार्थक करने के उद्देश्य से इस वर्ष बिहार पृथ्वी दिवस के अवसर पर पर्यावरण एवं वन विभाग द्वारा शहरों में साइकिल चालन को लोकप्रिय बनाने के अभियान की शुरुआत की गई। वास्तव में साइकिल न केवल पर्यावरण हितैषी है, बल्कि यह हमारी सेहत की रखवाली भी बखूबी करती है। उच्च रक्तचाप की शिकायत हो या फिर मोटापे और डाइबिटीज की, साइकिल की सवारी करना रामवाण साबित हो रहा है। साइकिल को अपनाकर मोटर वाहनों से निकलने वाले विषैले उत्सर्जन की मात्रा में कमी लायी जा सकती है। आश्चर्य नहीं कि विदेशों से लेकर देश के महानगरों तक में पर्यावरण के प्रति संवेदनशील नागरिकों द्वारा साइकिल को लोकप्रिय बनाने की मुहीम चल रही है। पुणे में डाक्टरों के एक समूह ने 1998 में साइकिल को लोकप्रिय बनाने के अभियान के अंतर्गत साइकिल से क्लीनिक आने-जाने की शुरुआत की, आज अनेक व्यवसायी, प्राध्यापक, अधिकारी उनका अनुसरण कर रहे हैं, जिसका प्रभाव पुणे के पर्यावरण पर स्पष्ट देखा जा सकता है। हम भी सोचें अपने शहर में कहां से शुरुआत की जा सकती है।

आमतौर पर पटना में सुबह और दोपहर के समय में कंकड़बाग से सचिवालय तक के 7 से 10 किलोमीटर की दूरी हम अपनी कार या बाइक से घंटे भर में तय करते हैं। यानी हमारी रफ्तार 7 से 10 किमी प्रति घंटे होती है, दिल्ली में यह रफ्तार घट कर 3 से 5 किमी प्रति घंटे की हो जाती है, जबकि यहीं इसी समय कोई भी साइकिल औसतन 10 से 12 किमी प्रति घंटे के रफ्तार से दौड सकती है। वह भी तब जब हमारी सड़कों पर साइकिल चलाने वालों के लिए कोई विशेष सुविधा उपलब्ध नहीं करायी गयी है। यदि कायदे का साइकिल उपलब्ध हो तो शहरों में साइकिल की रफ्तार 15 किमी प्रति घंटे से अधिक हो सकती है। जाहिर है साइकिल से हमारी गति बाधित नहीं होती। वास्तविक समस्या हिचक की होती है। हमारी समझ है कि कोई भी साइकिल चालक हमारे सम्मान का हकदार है, इसलिए कि वह हमारे हिस्से की हवा को प्रदूषित होने से बचा रहा होता है।

शहर के सभी नागरिकों खासकर प्राध्यापकों, डाक्टरों, कलाकारों, लेखकों, पत्रकारों .. जो भी समाज को दिशा देने की स्थिति में हैं, से मेरा आग्रह है कि शहर में साइकिल अभियान की अनिवार्यता को महसूस करते हुए इसे लोकप्रिय बनाने में अपना योगदान प्रदान करें। हमारी कोशिश शीघ्र ही इस अभियान से राज्य के अन्य शहरों को भी जोड़ने की होगी।

शुभकामनाओं के साथ

विवेक

(विवेक कुमार सिंह)

प्रधान सचिव

पर्यावरण एवं वन विभाग, बिहार

राज्य स्तरीय वन महोत्सव

पंद्रह प्रतिशत वनक्षेत्र के लक्ष्य प्राप्ति का संकल्प

बाँका जिला के अमरपुर थाना अन्तर्गत सुपहा में 65वें राज्यस्तरीय वन महोत्सव का उद्घाटन मुख्यमंत्री श्री जीतन राम माँझी ने वृक्षारोपण कर किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री जीतन राम माँझी पर्यावरण एवं वन मंत्री प्रशान्त कुमार शाही सहित उपस्थित तमाम गणमान्य व्यक्तियों ने अपने हाथों से वृक्षारोपण किया तथा पर्यावरण की सुरक्षा के लिये वृक्ष लगाये जाने और इसकी रक्षा किये जाने का संकल्प लिया। बाँका जिला के स्कूली छात्र–छात्राओं द्वारा पर्यावरण सुरक्षा पर आधारित नृत्य एवं संगीत प्रस्तुति भी इस अवसर पर की गयी। मुख्यमंत्री ने वन विभाग द्वारा लगाये गये पलास के फूल से बनने वाले सिन्दूर, अबीर के स्टॉलों का निरीक्षण किया। मुख्यमंत्री ने महती जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि पर्यावरण में संतुलन बहुत जरूरी है। हम सबों को संकल्प लेने की जरूरत है, जन सहयोग द्वारा वृक्षारोपण कर पर्यावरण को संतुलित बनाये रखेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि बिहार के बँटवारे के बाद बिहार में मात्र 7 प्रतिशत वन क्षेत्र बच गया था, पाँच–छह वर्षो के प्रयास से अब यह क्षेत्रफल बढ़कर 12.86 प्रतिशत हो गया है। वन क्षेत्रों को कम से कम पन्द्रह प्रतिशत किये जाने का लक्ष्य है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये आप सबको सहयोग करना होगा और कम से कम एक वृक्ष अवश्य लगाने होंगे। पर्यावरण के असंतुलन के कारण ही कहीं बाढ़ तो कहीं सुखाड़ की स्थिति उत्पन्न होती है। आज वृक्षों के कटाव के कारण वर्षा में कमी आयी है, वाटर लेयर (पानी का स्तर) नीचे जा रहा है, अगर वृक्षारोपण नहीं करेंगे तो वही समस्यायें होंगी जो अरब देश की है। हिन्दुस्तान और बिहार में भी यह स्थिति आ सकती है। हवा की गुणवत्ता में कमी हो गयी है, जिसके कारण लोग अस्वस्थ हो रहे हैं। इस विषय पर हम सब मिलकर लोगों को जागरूक करें, वन क्षेत्र के विस्तार के लिये वृक्षारोपण के प्रति लोगों को जागरूक करें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वृक्षारोपण पर्यावरण के लिए अत्यावश्यक है। बच्चे देश के भविष्य हैं। अपने–अपने दरवाजे के पास एक–एक वृक्ष लगाने के लिए संदेश दें, जिससे देश का भविष्य उज्ज्वल होगा। उक्त अवसर पर पर्यावरण एवं वन मंत्री प्रशांत कुमार शाही, प्रधान सचिव पर्यावरण एवं वन विभाग श्री विवेक कुमार सिंह, प्रधान मुख्य वन संरक्षक तथा अन्य वरीय पदाधिकारी एवं स्थानीय जनप्रतिनिधिगण उपस्थित थे।

बिहार पृथ्वी दिवस

मां है पृथ्वी, रक्षा करें इसकी

मुख्यमंत्री श्री जीतन राम माँझी ने बिहार पृथ्वी दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुये कहा कि पृथ्वी की सुरक्षा के लिए वृहद पैमाने पर पौधा लगाना चाहिये। उन्होंने कहा कि कैसे हम पृथ्वी की रक्षा करे? कैसे हम अधिक से अधिक वृक्ष लगाये? यह हमलोगों का उद्देश्य होना चाहिये। उन्होंने कहा कि हम 5 या 10 ही पेड़ लगायें लेकिन उसे सुरक्षित रखें। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए 33 प्रतिशत भूभाग पर जंगल होना चाहिये तभी सम्यक वर्षा होगी तथा हरियाली होगी।

उन्होंने कहा कि बिहार में 7 प्रतिशत जंगल था, पूर्व मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार द्वारा पृथ्वी के संरक्षण में जन सहभागिता एवं जनजागृति बढ़ाने से बिहार में 13 प्रतिशत हरियाली पैदा हुई है। मुख्यमंत्री ने पृथ्वी की सुरक्षा एवं पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए छात्रों को पर्यावरण की रक्षा एवं पृथ्वी की सुरक्षा हेतु 11 संकल्प दिलाये। उन्होंने पृथ्वी की सुरक्षा में जन सहभागिता बढ़ाने तथा कारगर उपाय करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुये हम पृथ्वी दिवस मना रहे हैं। हमें और हमारे बच्चों को पर्यावरण की रक्षा एवं पृथ्वी की सुरक्षा के लिए अभिरूचि लेनी होगी। छात्रों को समझना है तथा अभिभावकों को समझाना है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी संस्कृति ऐसी रही है जिसके चलते भारत विश्व (जगत) गुरू रहा है। भारत में दूध और घी की नदियाँ बहती थीं। उन्होंने रामायण की पंक्ति दुहराते हुये कहा कि 'दैविक दैहिक भौतिक तापा, रामराज न काहू ब्यापा' चरितार्थ होती थी क्योंकि लोग पर्यावरण की रक्षा करते थे। आज हम पर्यावरण को नुकसान पहुँचाकर पृथ्वी की आयु को घटाते जा रहे हैं। हमलोग सचमुच आतंकित है कि पृथ्वी का क्या होगा? पृथ्वी रहेगी तभी हमलोग रहेंगे। उन्होंने कहा कि 9 अगस्त 2011 को अगस्त क्रांति के दिन बिहार में पृथ्वी दिवस मनाया जाने लगा। जिस तरह महात्मा गाँधी ने भारत छोड़ो आन्दोलन के समय 'करो या मरो' का नारा दिया था, उसी से प्रेरणा लेकर भावी पीढ़ी को पृथ्वी एवं इसके पर्यावरण की सुरक्षा के लिए संकल्प दिलाया जाता है। अगर हम 'करो या मरो' की स्थिति नहीं लायेंगे तो पृथ्वी नहीं बचेगी। हमलोगों को सतत् जागरूक एवं सतर्क रहने की आवश्यकता है। हमारे बच्चे पर्यावरण की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हिन्दुस्तान की संस्कृति है कि हम माता–पिता को प्रणाम करते हैं। हम पेड़ एवं पशुओं की पूजा करते हैं। पीपल वृक्ष की पूजा होती है क्योंकि वह हमें रात–दिन आक्सीजन देता है। पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव में आकर हमें हंसी–मजाक में इस बात को नहीं लेना चाहिये। उन्होंने कहा कि देश अपनी माँ है, पृथ्वी अपनी माँ है, हम इसकी पूजा करें। हमें अपनी संस्कृति को कभी नहीं भूलना चाहिये। संस्कृति भूलने के कारण ही जाति, धर्म, भाषा, साम्प्रदायिकता एवं क्षेत्रीयता को लेकर झगड़ा होता रहता है। उन्होंने कहा कि पृथ्वी को बचाना होगा। हमने पृथ्वी के संरक्षण तथा पर्यावरण संतुलन बनाये रखने हेतु अधिक से अधिक पौधा अवश्य लगाने व उसका संरक्षण करने तथा नदी, तालाब तथा पोखर को प्रदूषित नहीं करने का जो संकल्प लिया है, उसे पूरा करना होगा।

उन्होंने इस अवसर पर ई–प्लान्टेशन एन्ड्रायड मोबाइल एप्लिकेशन का उद्घाटन किया। जिससे मोबाइल फोन द्वारा पर्यावरण एवं वन विभाग बिहार की पौधा रोपण योजनाओं के अनुश्रवण में सुविधा होगी।

स्वागत भाषण प्रधान सचिव, पर्यावरण एवं वन, श्री विवेक कुमार सिंह ने किया। प्रधान मुख्य वन संरक्षका बी. ए. खान एवं अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक डॉ डी.के. शुक्ला एवं एस.एस. चौधरी ने भी सभा को संबोधित किया। निदेशक हरियाली मिशन श्री परशुराम राम ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

2012 में बिहार पृथवी दिवस का शुभारंभ

वृक्ष सुरक्षा दिवस

रक्षाबंधन याद दिलाता वृक्ष सुरक्षा

पवित्र पावन रक्षाबंधन के त्योहार एवं वृक्ष रक्षा दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री श्री जीतन राम माँझी ने घोषणा की कि इको पार्क पॉलिथीन मुक्त पार्क घोषित रहेगा। पार्क के अन्दर पॉलिथीन का व्यवहार वर्जित रहेगा। पार्क में आने वाले लोगों को यहां पर एक बैग जिसका मूल्य 10 से 15 रूपये है, मात्र 5 रूपये मूल्य अदा करने पर सामुदायिक दायित्व निर्वाह के अन्तर्गत दिये जायेंगे। पार्क के आगन्तुक इस बैग में अपने सामानों को लेकर पार्क के अन्दर जा सकेंगे और यह बैग उनका हो जायेगा।

पार्क के आगन्तुकों के सामानों को पार्क के बाहर सुरक्षित रखने की व्यवस्था की गई है। पावर ग्रिड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया द्वारा 50,000 बैग कॉरपोरेट रिसपॉन्सब्लिटी के अन्तर्गत मुख्यमंत्री को आज समारोह में भेंट की गयी।

मुख्यमंत्री ने वृक्ष सुरक्षा दिवस के अवसर पर राजधानी वाटिका (इको पार्क) में एक बहेड़ा का वृक्ष का रोपण भी किया तथा वृक्षों को रक्षा सूत्र बांधा। रक्षा बंधन के पवित्र त्योहार के अवसर पर स्कूली छात्राओं ने मुख्यमंत्री की कलाई पर राखी बांधी तथा मुख्यमंत्री का आशीर्वाद प्राप्त किया। मुख्यमंत्री ने बच्चों को कहा कि वे पर्यावरण के प्रति सजग हों, पर्यावरण की सुरक्षा करें। प्रदूषण से अपने घर, मोहल्ले और नगर को मुक्त रखें। पर्यावरण संतुलन के लिए जरूरी है कि हम वृक्ष लगायें और इसकी रक्षा करें। इस अवसर पर पर्यावारण एवं वन मंत्री, श्री पी.के. शाही, खाद्य उपभोक्ता मंत्री, श्री श्याम रजक, गन्ना उद्योग मंत्री श्रीमती रंजू गीता, विधायक श्री अरूण मांझी, प्रधान सचिव पर्यावरण एवं वन विभाग श्री विवेक कुमार सिंह, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य –पदाधिकारी श्री गोपाल सिंह, नागरिक परिषद के महासचिव श्री छोटू सिंह सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति, छात्र–छात्रायें एवं प्रबुद्ध नागरिकगण उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने पत्रकारों से वार्ता करते हुये कहा कि भारतीय संस्कृति में रक्षाबंधन का बहुत महत्व है। बहनें अपने भाई के कलाई पर रक्षा सूत्र बांधती हैं और भाइयों के सुरक्षित रहने के लिए दुआयें करती हैं ताकि वे बहनों की रक्षा कर सकें। वृक्षों की रक्षा करना हमारा महान कर्तव्य है। पर्यावरण की रक्षा के लिए 20 से 33 प्रतिशत वन क्षेत्र राज्य में होना चाहिये। पूर्व मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के प्रयास से राज्य में वन क्षेत्र 7 प्रतिशत से बढ़कर 13 प्रतिशत हो गया है। 2017 तक इसे 15 प्रतिशत तक किया जायेगा। इसके लिए प्रयास चल रहा है। उन्होंने कहा कि बिहार देश का पहला राज्य है जहाँ रक्षाबंधन के दिन को 'वृक्ष सुरक्षा दिवस' के रूप में मनाया जा रहा है। यह परंपरा विगत चार वर्षों से जारी है।

2012 में प्रथम वृक्ष सुरक्षा दिवस पर तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार का उद्बोधन

स्वास्थ्य का उपहार लाती साइकिल

पर्यावरण एवं वन विभाग द्वारा पटना महानगर में बढ़ते वायु एवं ध्वनि प्रदूषण को कम करने के उद्देश्य से साइकिल चलाओ पर्यावरण बचाओ अभियान 2014 की शुरुआत पहली सितम्बर 2014 से शुरु की गई है। यह योजना 31 दिसम्बर 2014 तक प्रभावी रहेगा।

इस योजना का मुख्य उद्देश्य पर्यावरणिक प्रदूषण का स्तर कम करना, साईकिल सवारी के कर्मियों में फिटनेस बढ़ाना, तनाव अवसाद एवं क्रोध में कमी लाना, शारीरिक एवं मानसिक संतुलन बनाना, मोटापा में कमी लाना, स्टेमिना में वृद्धि करना इत्यादि है।

इस योजना में महिला एवं पुरुष दोनों शामिल हो सकते हैं जो संजय गांधी जैविक उद्यान, पटना में सुबह टहलने आते है। योजना में शामिल होने वाले व्यक्ति को साइकिल से संजय गांधी जैविक उद्यान टहलने के लिए आना अनिवार्य होगा। इस योजना का निबंधन दिनांक 30.08.14 से 02.09.14 तक किया गया था। अबतक लगभग 700 व्यक्ति इस योजना से जुड़ चुके हैं। अब निबंधन कार्यक्रम प्रत्येक रविवार को सुबह 06.30 बजे से 08.30 बजे तक निःशुल्क किया जाएगा। साइकिल से आने वाले व्यक्ति इस योजना में शामिल होने के लिए अपना निबंधन उद्यान गेट नं०–2 पर कराएंगे, निबंधन कराए हुए व्यक्ति द्वारा साईकिल, स्टैंड में निःशुल्क लगाया जाएगा एवं उन्हें न्यूनतम एक घंटा उद्यान में भ्रमण करने पर साइकिल स्टैंड से साइकिल प्राप्त करते समय एक इको कूपन दिया जाएगा।

योजना की सफलता हेतु एवं साइकिल चलाने के लिए जागरुकता लाने के उद्देश्य से योजना के प्रतिभागियों को पुरस्कृत किए जाने की भी योजना हैः– 10 कूपन प्राप्त करने वाले सभी प्रतिभागी को एक–एक कैप, 20 कूपन प्राप्त करने वाले 1000 प्रतिभागियों को एक–एक गोल गला वाला टी–शर्ट, 30 कूपन प्राप्त करने वाले 500 प्रतिभागियों को एक–एक कॉलर वाला टी–शर्ट, 50 कूपन प्राप्त करने वाले 250 प्रतिभागियों को एक–एक ट्रेक सूट एवं 80 कूपन प्राप्त करने वाले 100 प्रतिभागियों को एक–एक साइकिल पुरस्कार स्वरूप दिया जाएगा।

कैप संबंधी पुरस्कार सभी 10 कूपनधारियों को दिया जाएगा। परन्तु अन्य सभी पुरस्कार जिसकी संख्या निर्धारित है, सबसे पहले निर्धारित संख्या में कूपन जमा करने वाले व्यक्ति को ही दिया जाएगा। यदि एक साथ ही निर्धारित संख्या से ज्यादा व्यक्तियों द्वारा कूपन जमा कर दिया जाता है तो ऐसी स्थिति में सभी कूपनाधारियों को लॉट्री ड्रा निकालकर पुरस्कृत किया जाएगा। पुरस्कार के लिए योजना अवधि में प्रत्येक माह के अंत में पुरस्कार वितरण किया जाएगा। इस प्रकार पहला वितरण अक्टूबर में, दूसरा नवम्बर में, तीसरा दिसम्बर में और चौथा जनवरी 2015 में होगा। पहले मासिक पुरस्कार में जो व्यक्ति जमा कूपन की संख्या के आधार पर पुरस्कार प्राप्त कर लेंगे, उनके जमा कूपन की वैधता समाप्त हो जाएगी और उन्हें अगले पुरस्कार के लिए दोबारा निबंधन कर नये सिरे से कूपन जमा करना होगा। यह उनकी इच्छा पर निर्भर करेगा कि वे जमा कूपन पर पुरस्कार प्राप्त करें एवं योजना से बाहर हो जाए अथवा बगैर मासिक पुरस्कार लिए अपना कूपन जमा करते जाए तथा एक बार ही पुरस्कार लें।

इस योजना में शामिल व्यक्ति साइकिल चलाने से शारीरिक रूप से स्वरूप, तंदुरुस्त तो रहेंगे ही, पर्यावरण प्रदूषण के स्तर को कम करने में भी अपनी भूमिका निभाएंगे एवं समाज के प्रति/पर्यावरण सुरक्षा के प्रति अपनी जिम्मेवारी का निर्वहन करेंगे। अगर यह योजना आम जनों में लोकप्रिय होता है तो इस योजना की अवधि का विस्तार अगले कैलेण्डर वर्ष के लिए भी लागू किया जा सकता है।

दुनिया महसूस कर रही साइकिल की अनिवार्यता

बर्लिन घूमते समय मुझे दिखा कि जगह-जगह लोग साइकिलों पर चलते आये। कुछ बच्चे थे कुछ युवक युवतियां तो फिर कुछ और बड़े। कुछ लोग अपने बच्चों को साइकिल पर बिठा कर जा रहे थे, कुछ लोग साइकिलों पर ही बर्लिन यात्रा कर रहे थे। बर्लिन में सारी जगह खम्बे बने हैं, आप वहीं पर अपनी साइकिलों पर ताला लगाकर छोड़ सकते हैं। मेरे पास समय होता तो मैं भी किराये पर साइकिल लेकर घूमना पसन्द करता।

यूरोप में साइकिल चलाने का काफी चलन है। इसके दो बड़े कारण हैं। यह चालक के स्वास्थ्य और पर्यावरण दोनों के लिये फायदेमन्द है। बर्लिन में, मुझे बहुत सारे बच्चे साइकिल पर स्कूल जाते, और महिलायें एवं पुरुष ऑफिस जाते दिखे। वियाना में भी लोग साइकिलों पर घूमते नजर आये। शायद यही कारण हो कि इन दोनों जगह प्रदूषण बहुत कम था। इन दोनों जगह बहुत कम मोटर साइकिलें दिखीं। बहुत से लोग छोटी कार चलाते दिखे। लगता है कि यहां छोटी कारें काफी लोकप्रिय हैं।

यूरोप में किराये में साइकिल भी बहुत आसानी से मिल जाती है और इसे जगह-जगह पर किराये पर लिया जा सकता है। यह किराये में ली जाने वाली कार जैसा है और स्वचालित हैं। लेकिन अब नयी तकनीक से युक्त होने के कारण खोयी जाने वाली साइकिलों का आसानी से पता लगाया जा सकेगा। अमेरिका में भी इस तरह का चलन शुरू हो रहा है।

कुछ दिन पहले न्यूयार्क टाइम्स के एक लेख में भी लिखा था कि अमेरिका के कई शहरों में साइकिल ट्रैक बन रहे हैं और वे साइकिल चलाने पर जोर दे रहे हैं। अपने देश में कुछ उल्टा हो रहा है। हम सस्ती एक लाख रुपये की कार बनाने के बारे में सोच रहे हैं ताकि सबको कार मिल सके; पर न तो सार्वजनिक यात्रा करने के संसाधनों को मजबूत कर रहे हैं, न ही पैदल अथवा साइकिल चलाने पर जोर दे रहे हैं। कुछ दिन पहले इसी बात को लेकर एक लेख हिन्दुस्तान टाइम्स में निकला था। यदि सारे हिन्दुस्तानियों के पास कार हो जायें यानि की सवा अरब कारें- क्या हाल होगा?

इसी संदर्भ में स्मरणीय है कि जर्मनी जिसने दुनिया को मर्सिडीज, ऑडी जैसी शानदार गाडियां दीं, उसके एक छोटे से शहर वाबेन ने पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से एक पहल करते हुए अपने शहर में कारों पर प्रतिबन्ध लगा दिया है, जिससे 57 प्रतिशत लोगों ने अपनी कारें बेंच दी हैं। शहर में परिवहन के लिए साइकिल के अतिरिक्त ट्राम एक अच्छा साधन है। लम्बी दूरी की यात्रा के लिए जिन्होंने गाड़ियां रखी हैं, उनकी कार पार्किंग के लिए शहर से बाहर व्यवस्था की गई है।

शहर में कार पार्किंग के स्थान पर फूलदार क्यारियां बनाई गई हैं। अब शहर में वाहनों के शोर व उनके प्रदूषण के स्थान पर फूलों की महक व साइकिल की घंटियां सुनाई देंगी। कार खरीदने की हैसियत रखने वाले नीदरलैंड के निवासियों के लिए साइकिल चलाना सामान्य सी बात है। यहाँ जनसंख्या से अधिक साइकिलें हैं। यहाँ की कुल आबादी 163 लाख है, जबकि साइकिलों की संख्या 180 लाख से अधिक है। यहाँ साइकिल उच्च वर्ग का फैशन स्टेटस बन गई है। कुछ साइकिलें छोटे मोटर वाली हैं। यहाँ के लोगों ने पेट्रोल की बढ़ती कीमत, पर्यावरण की चिन्ता और स्वास्थ्य पर छाये संकट का हल साइकिल के रूप में निकाल लिया है। जर्मनी, नीदरलैंड के साथ ही चीन के लोगों ने भी साइकिल को प्रमुखता दी है। अब बारी हमारी है।

(संदर्भ-उन्मुक्त ब्लाग से)

हरियाली बढाने का सार्थक प्रयास : कृषि वानिकी

राज्य के घटते हरियाली आवरण से चिंतित बिहार सरकार ने हरियाली आवरण बढ़ाने के लिए जन सहयोग से लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कृषि वानिकी योजना का प्रारंभ वर्ष 2012 में किया। यह योजना पाँच वर्षों के लिए अर्थात 2017 तक के लिए लाया गया है। जो राज्य के सभी जिलों में लागू है। इस योजना में शामिल होने वाले इच्छुक किसानों को उनके पसंद के पौधे वर्षा ऋतु में अपने खेतों, मेड़ों एवं बगान में लगाने के लिए निःशुल्क दिए जाते हैं। पौधों की देख–भाल करने एवं सुरक्षित रखने पर किसानों को पौधों की उत्तरजीविता के आधार पर प्रोत्साहन राशि भी दिए जाने का प्रावधान किया गया है। 50% से ज्यादा उत्तरजीविता रहने पर प्रथम वर्ष में 15 रुपये प्रति पौधा, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष में क्रमशः 10–10 रुपये प्रति पौधा लाभुक किसानों को दिया जाएगा। 50% से कम उत्तरजीविता रहने पर यह राशि क्रमशः 12 रुपये एवं 8 रुपये निर्धारित है। यह योजना कृषकों एवं अन्य भूधारकों के लिए लाभकारी तो है, राज्य में हरियाली आवरण बढ़ाने एवं पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से भी अत्यंत ही लाभकारी एवं उपयोगी है।

योजना शुरुआत के प्रथम वर्ष से ही किसानों एवं अन्य भूधारकों ने काफी दिलचस्पी दिखाई है। इस वर्ष अभी तक 9447 किसानों द्वारा 101.87986 लाख पौधों की मांग का आवेदन वन विभाग में दिया जा चुका है। पर्यावरण एवं वन विभाग, बिहार सरकार की यह योजना निश्चय ही प्रदेश में हरियाली आवरण बढ़ाएगा।

पोपलर वृक्षारोपण : बढाएगी किसानों की समृद्धि

बिहार में घटती वन संपदा से चिंतित राज्य सरकार द्वारा जनसहयोग से वन–संपदा की ज्यादा से ज्यादा वृद्धि के उद्देश्य से हरियाली मिशन के तहत पोपलर वृक्षारोपण योजना का प्रारंभ वर्ष 2012 में किया गया। पोपलर पौधा एक शीघ्र बढ़ने वाला प्रजाति है जो मात्र 6–7 साल की अवधि में ही हार्वेस्ट करने के योग्य हो जाता है। इस अल्प अवधि में ही किसान पोपलर पौधा लगाकर आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकेगा। इस निमित्त किसानों, जमीन मालिकों को उनके जमीन पर पोपलर पौधा उगाने के लिए प्रति एकड़ 10,000 पोपलर का कटिंग उपलब्ध कराया जाएगा। पोपलर के एक साल के पौधों को पर्यावरण एवं वन विभाग द्वारा 15 रुपये प्रति पौधा की दर से किसानों से खरीदकर अन्य इच्छुक लाभुकों को उपलब्ध कराया जाएगा। पोपलर पौधों का वृक्षारोपण सामान्यतः माह नवंबर – दिसंबर में किया जाता है। इस वर्ष पोपलर वृक्षारोपण योजना के तहत किसानों के सहयोग से 77 लाख पौधों को रोपण एवं पोपलर पौधशाला में 225 लाख कटिंग उगाने का लक्ष्य रखा गया है। पर्यावरण एवं वन विभाग की यह महत्वाकांक्षी योजना आने वाले समय में वन–संपदा में काफी वृद्धि तो लाएगा ही, पर्यावरण संरक्षण में अपनी भागीदारी निभाएगा, हरित आवरण बढ़ाएगा और साथ–साथ किसानों के लाभ में सार्थक वृद्धि भी लाएगा।

पर्यावरण गपशप

साइकिल पर गूगल

दुनिया के सबसे बड़े सर्च इंजिन गूगल ने अपने कर्मचारियों को काम पर आने के लिए मुफ्त में बाइक ठहरिए, ..साइकिल...देने का फैसला किया है। बाइक निर्माता कंपनी रैलेग यूरोप गूगल के तकरीबन दो हजार स्थायी कर्मचारियों को जो कि यूरोप, मध्य-पूर्व और अफ्रीका में काम कर रहे हैं को यह साइकिल देगी। इस पावर पैडल साइकिल के साथ मिलेंगे फ्री में गूगल लिखे हैलमेट। यह आइडिया भी गूगल के एक कर्मचारी हॉलजर मेयेर ने दिया और इसे सभी ने पसंद किया। लेकिन ऐसा नहीं है कि सारी साइकिलें एक ही तरह की दी जाएंगी। इसमें कूल क्रूजर मॉडल तक को चुना जा सकता है, जो कि फोल्डिंग साइकिल है। गूगल के एचआर विभाग के निदेशक लिआन होर्नसे का कहना है कि हम केवल टेक्नालॉजी में ही कुछ अद्‌भुत नहीं करना चाहते बल्कि अपने कर्मचारियों के लिए भी करना चाहते हैं। वे कहते हैं कि साइकिल से जहां कर्मचारी अपने को चुस्त-दुरुस्त रख सकेंगे वहीं वे इससे उनके शहरों को बेहतर ढंग से जानने के अलावा पर्यावरण को मस्त रखने में योगदान करेंगे।

सक्रियता बढ़ाती है साइकिल

अमेरिकी कॉलेज आफ स्पोर्ट्स मेडिसिन की पत्रिका में छपे शोध के अनुसार वे बच्चे जो साइकिल से स्कूल जाते हैं उन बच्चों की तुलना में ज्यादा सक्रिय होते हैं जो यातायात का कोई और साधन अपनाते हैं। शोधकर्ताओं ने इंगलैंड के 10 से 16 वर्ष की उम्र तक के 6,000 बच्चों पर शोध किया और परिणाम प्रकाशित किये ।

वर्ष 2007 और 2008 में बच्चों की हृदय सम्बन्धी समस्याओं और यात्रा की आदतों पर शोध किया गया । ऐसा पाया गया कि लगभग 30 प्रतिशत लड़के जो साइकिल से स्कूल जाते थे वे दूसरे माध्यम से स्कूल जाने वाले बच्चों की तुलना में अधिक स्वस्थ थे और लड़कियों में यह फायदे कहीं ज्यादा थे ।

प्राणवायु देता है पीपल

पीपल भारत के सबसे अधिक महत्वपूर्ण वृक्षों में से एक है। यह सौ फुट से भी ऊँचा हो सकता है। यह सबसे महत्वपूर्ण छायादार वृक्ष माना जाता है। पीपल की आयु 90 से 100 सालों के आसपास आँकी गई है। परन्तु यह वृक्ष विशालतम रूप धारण करके सैकड़ों वर्षों तक खड़ा रहता है। भारतीय संस्कृति में पंचवटी के पाँच वृक्षों में से एक स्थान पीपल को भी मिला है। इसका तना ललाई लिए हुए सफेद व चिकना होता है। इसकी छाल भूरे रंग की होती है, तने तथा शाखाओं को गोदने पर इससे सफेद गाढ़ा दूध निकलता है। बरगद और गूलर वृक्ष की भाँति इसके पुष्प भी गुप्त रहते हैं। अतः इसे 'गुह्यपुष्पक' भी कहा जाता है।

पीपल के पांच पत्तों को दूध में उबालकर चीनी या खांड डालकर दिन में दो बार, सुबह-शाम पीने से जुकाम, खांसी और दमा में बहुत आराम होता है। इसके सूखे पत्ते का चूर्ण भी खासा उपयोगी होता है। इस चूर्ण को जख्मों पर छिड़कने से फायदा होता है।

पीपल के अकुंरों को मिलाकर पतली खिचड़ी बनाकर खाने से दस्तों में आराम मिलता है। यदि रोगी को पीले रंग के दस्त जलन के साथ हो रहे हों तो इसके कोमल पत्तों का साग रोगी को दिया जाना चाहिए।

पेचिश, रक्तस्राव, गुदा का बाहर निकलना तथा बुखार में पीपल के अकुंरों को दूध में पकाकर इसका एनीमा देना बहुत लाभकारी होता है।

पीपल के फल भी बहुत उपयोगी होते हैं। इसके सूखे फलों का चूर्ण पानी के साथ चाटने से दमा में बहुत आराम मिलता है। खांसी होने पर इसी चूर्ण को शहद के साथ चाटना चाहिए। पीपल की छाल से काढे या फॉट से कुल्ला करने से दांत दर्द में आराम मिलता है और मसूढे मजबूत होते हैं। जख्मों को छाल के काढ़े से धोने से वे जल्दी भरते हैं। जख्मों पर यदि खाल न आ रही हो तो बारीक चूर्ण नियमित रूप से छिड़कने पर त्वचा आने लगती है। पैरों की एड़ियां फटने या त्वचा के फटने पर उसमें पीपल का दूध लगाया जाना चाहिए।

सेंट्रल ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सी.डी.आर.आई.) के वैज्ञानिकों ने अपने शोध में पाया है कि पीपल का एक सामान्य वृक्ष 1800 कि.ग्रा. प्रति घंटे की दर से आक्सीजन उत्सर्जित करता है। पृथ्वी पर पाये जाने वाले सभी वृक्षों में पीपल को प्राणवायु यानी ऑक्सीजन को शुद्ध करने वाले वृक्षों में सर्वोत्तम माना जा सकता है। पीपल ही एक ऐसा वृक्ष है जो चौबीसों घंटे ऑक्सीजन देता है जब कि अन्य वृक्ष रात को कार्बन-डाइ-आक्साइड या नाइट्रोजन छोड़ते हैं। इस वृक्ष का सबसे बड़ा उपयोग पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने में किया जा सकता है, क्योंकि यह प्राणवायु प्रदान कर वायुमण्डल को शुद्ध करता है।

मनोज शर्मा

बिहार का वनावरण मानचित्र

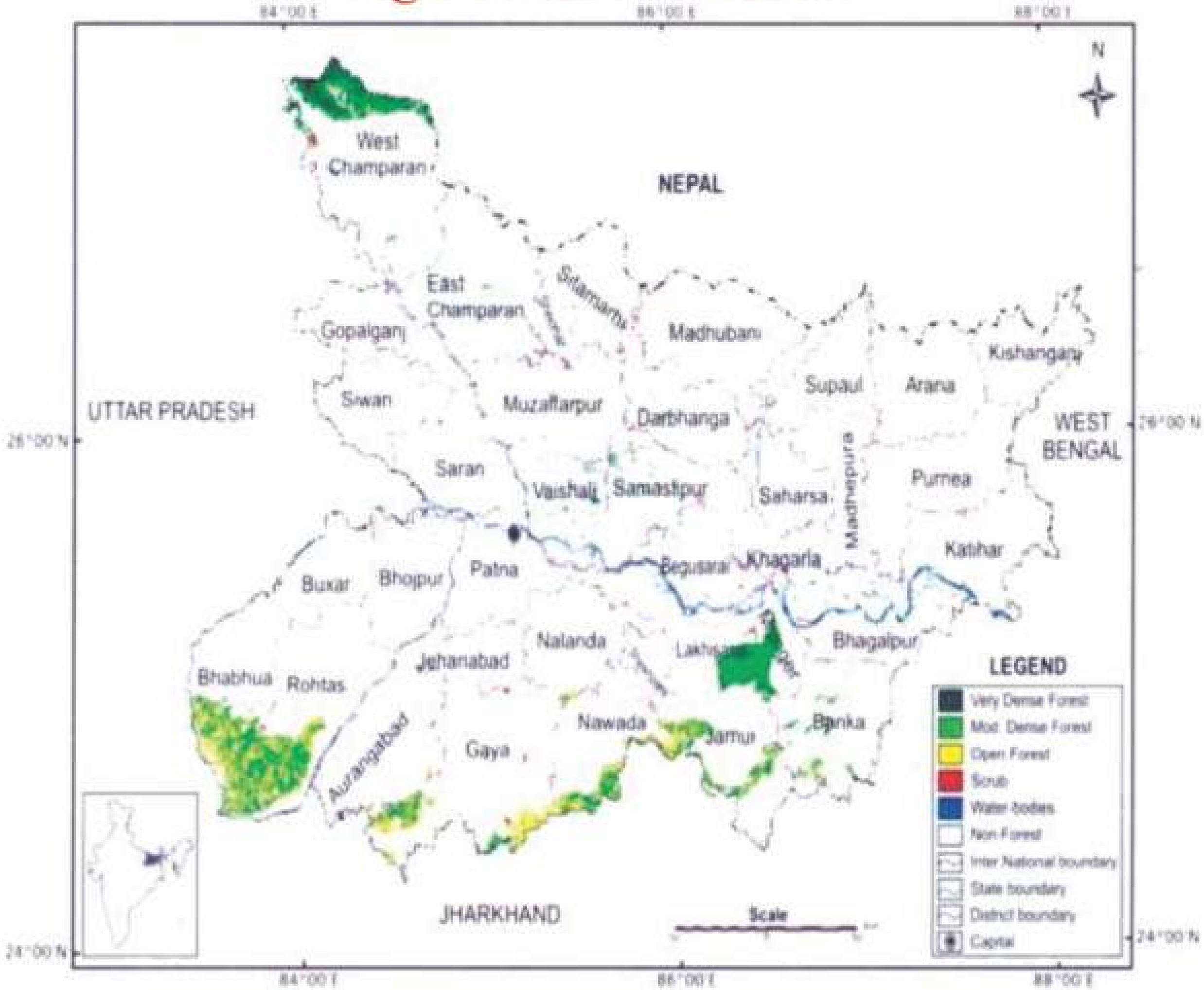

Forest Cover Map of Bihar

Forest Cover of Bihar

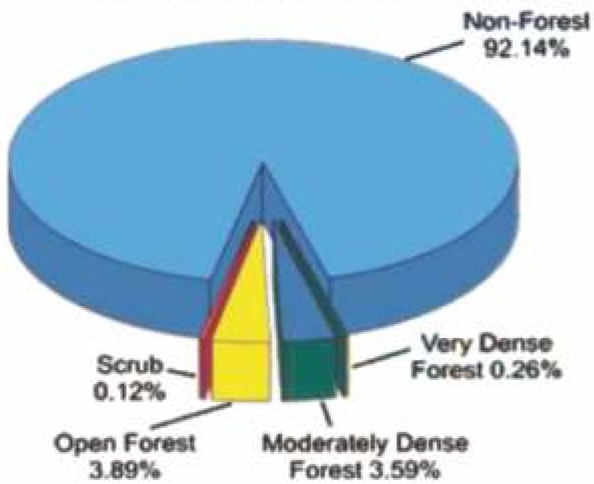

Source: Forest Survey of India Report, 2013

Design and printed by *Laser Printers*, Patna 4, Ph. 9334116085